APRIL 2014 TO MARCH 2015

पत्रिका जिला

चने की फसल को सुरक्षित रखने बताए उपाय

कवर्धा

bureau@patrika.com

कृषि विज्ञान केंद्र में किसानों को चने फसल के सुरक्षा की सलाह कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दी गई। ताकि वे अच्छा उत्पादन लेकर लाभ प्राप्त कर सके। इसके लिए वैज्ञानिकों की टीम ने खेतों में अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन और प्रक्षेत्र परीक्षण भी किया।

जिले में लगभग 85 हजार हेक्टेयर भूमि में चने की खेती की जाती है। फसल बुआई से लेकर कटाई तक इसमें बीमारियां देखने को मिलती है। इसका मुख्य कारण फफूंद जनित बीमारी जैसे कालर राट, उकठा व जड़ सड़न है। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. बीपी त्रिपाठी ने बताया कि चना फसल में कालर राट की समस्या ज्यादा देखने को मिलती है। इसका लक्षण बुआई के 20-25 दिन बाद ही शुरू हो जाता है। जैसे ही पौधा उगता है, जगह-जगह मरने लगता है जो की स्क्लेरोशियम नामक फफूंद के कारण होता है। यदि इस पौधे को उखाड़ कर देखें, तो जमीन के नीचे वाला हिस्सा सफेद कवक जाल लिया रहता है और उस पर छोटे-छोटे स्क्लेरोशियम सरसों के दाने जैसे दिखाई देता है। इस बीमारी के नियंत्रण के लिए समन्वित प्रबंधन के तरीके किसानों को अपनाना चाहिए। कार्यक्रम समन्वयक ने बताया कि फसल चक्र परिवर्तन और अनुशंसित किस्म के बीजों का चयन करें। बीज बुआई से पूर्व उपचारित करें। इसमें सबसे पहले फफूंदीनाशक कार्बेन्डाजिम 03 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर के हिसाब से प्रयोग करें। उसके बाद ट्राइकोडर्मा जैव फफूंदनाशक 10 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से और अंत में राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करें। बुआई के बाद ज्यादा पानी न देकर खेतों में केवल नमी बनाए रखें। चने में इल्ली के समन्वित नियंत्रण के लिए चने की 10 लाइन के बाद एक लाइन धनिया लगाएं और फेरोमेन ट्रेप का उपयोग करने किसानों को सलाह दी गई है।

कवर्धा

फसलों का किया गया निरीक्षण

कवर्धा। कृषि विज्ञान केन्द्र कवर्धा के वैज्ञानिकों द्वारा मौसम में आए परिवर्तन को देखते हुए प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक डॉ. बीपी त्रिपाठी एवं श्रीमती प्रमिला कांति द्वारा जिले के विभिन्न गांवों जैसे खैनबरसा, सुखाताल, जेवड़न आदि का भ्रमण किया गया। मुख्यतः चना, अरहर आदि फसलों का निरीक्षण किया गया। वर्तमान में चने की फसल में भी अच्छी संख्या में फल्लियां लगने की अवस्था में है इसी प्रकार अरहर की फसल में भी अच्छी संख्या में फलियां लगी हुई है। ऐसी अवस्था में खुला वातावरण व तेज धूप की आवश्यकता होती है। परंतु मौसम में आए परिवर्तन फसलों में कीट बीमारी की वृद्धि के लिए अनुकूल साबित हो रहे है। मौसम में उपस्थित आवश्यकता से अधिक नमी के कारण चना व अरहर की फसल में इल्ली की समस्या देखने को मिल रही है। कृषि वैज्ञानिकों ने कृषकों को आवश्यक सलाह दी है।

पत्रिका . कवर्धा . सोमवार . 05 जनवरी 2015

कृषि विशेषज्ञों ने बताए कीटव्याधि रोकने के नुस्खे

कवर्धा

bureau@patrika.com

मौसम में अचानक आए परिवर्तन के कारण रबी फसलों में कीट व्याधि बढ़ चुकी है, जिसके चलते किसान चिंतित हैं। इसे लेकर कृषि विज्ञान केंद्र के विशेषज्ञ कार्यक्रम सहायक कीटविज्ञान स्वाति शर्मा, विषय वस्तु विशेषज्ञ बीएस परिहार, सस्य विज्ञान प्रमिला कांत ने फसलों में कीट प्रकोप को रोकने के नुस्खे बताए हैं।

गत सप्ताहभर से आसमान में बदली छाई हुई है। कहीं-कहीं बारिश होने से रबी फसल जैसे अरहर, चना, गन्ना और आलू आदि फसलों में कीट व बीमारी की वृद्धि में अनुकूल साबित हो रहे हैं। अरहर की फसल वर्तमान में फल्लियां लग चुके हैं। ऐसी अवस्था में इस फसल को खुला वातावरण व तेज धूप की आवश्यकता होती है। इसी प्रकारण चने की फसल में भी अच्छी तादात में फूल लगने की अवस्था में है। किंतु बिगड़ैल मौसम में आवश्यकता से अधिक नमी के कारण फली छेदक

कवर्धा. किसानों को कीट प्रबंधन की जानकारी देते कृषि विशेषज्ञ।

कीटों का प्रकोप देखने को मिल रहा है। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों ने अरहर व चने की फसल में फली छेदक कीट के प्रकोप से, बचाव के लिए एन्डोक्साकार्ब 200 मिली/एकड़ की दर से छिड़काव करने का सुझाव दिया है। इसके साथ ही सरसों में मैनी का प्रकोप को रोकने लिए फास्फोमिडान 300-400 मिली की दर से छिड़काव करने सलाह दी गई है। इसी तरह गन्ने के लाल सड़न को टेबुकोनाजोल 0.1 प्रतिशत घोल में आधे घंटे तक डुबोकर रखने, फिर बुआई करने पर लाल सड़न कम हो जाती है।

दूर करें झुलसा रोग

पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. बीपी त्रिपाठी ने बताया कि आलू में पछेती झुलसा नामक रोग की समस्या ज्यादा है। वातावरण में अधिक आर्द्रता होने पर यह रोग पत्तियों को नष्ट कर देता है। निचली पत्तियों पर हल्के हरे रंग के धब्बे सरीखे दिखाई देते हैं। रोगी पत्तियों के गिरने से मिट्टी की सतह के पास वाले कंद प्रभावित होते हैं।

कवर्धा । सहसपुर लोहारा । बोड़ला

गन्ना उत्पादन में बीजोपचार की सलाह

कृषकों को बीजोपचार के तरीके बताये

नगर संवाददाता

कवर्धा. कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक डॉ. बी.पी. त्रिपाठी एवं कार्यक्रम सहायक, कीट विज्ञान श्रीमति स्वाति शर्मा ने प्रशिक्षण एवं अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के माध्यम से जिले के किसानों को गन्ना पौध सुरक्षा के तरीके बताए जिससे गन्ने का अधिक से अधिक उत्पादन हो सके.

ज्ञात हो कि कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा ग्राम सुखाताल में अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत गर्म जल एवं रसायनिक दवा टेबुकोनाजोल 0.1 प्रतिशत मात्रा द्वारा 12 कृषकों को बीज उपचार की तकनीकी बताई गई. जिले में गन्ने का रकबा प्रति वर्ष बढ़ता जा रहा है और इसी के साथ गन्ने के प्रमुख बीमारी लाल-सड़न एवं कीट इल्ली का प्रकोप भी निरंतर बढ़ता जा रहा है. जिसे देखते हुए किसानों को गन्ने की बुआई के पूर्व काफी सावधानियां बरतने का सुझाव दिया गया, जिससे कम से कम रोग एवं कीट का प्रकोप फसल में हो.

गन्ने की बुआई के पूर्व टेबुकोनाजोल रसायनिक दवा की 0.01 प्रतिशत मात्रा में गन्ने के टुकड़े को 15 से 20 मिनट डुबाकर रखने के बाद बुआई करने पर लाल सड़न बीमारी के प्रकोप की संभावना कम रहती है. साथ ही बुआई के पूर्व स्वस्थ गन्ने के बीज जिसमें किसी प्रकार की बीमारी व कीड़े न हो उसका उपयोग करें, तथा इल्ली के नियंत्रण के लिए कारटेप हाइड्रोक्लोराइड की चार से सात किलोग्राम की मात्रा बुआई के समय नालियों में छिड़कना चाहिए. इन सभी मुख्य बिन्दुओं को ध्यान में रखकर गन्ने की फसल का ज्यादा से ज्यादा उत्पादन कर आय का स्रोत बढ़ा सकते है.

नवभारत

नवभारत

चना उत्पादन बढ़ाने की सलाह दे रहे

नगर संवाददाता

कवर्धा. कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक डॉ.पी.पी. त्रिपाठी एवं केन्द्र के अन्य वैज्ञानिकों का दल प्रशिक्षण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं प्रक्षेत्र परीक्षण के माध्यम से जिले के किसानों को चना फसल के अच्छे उत्पादन की सलाह दे रहे हैं. ज्ञात हो कि जिले में लगभग 85 हजार हे. में चने की खेती की जाती है, जिसमें बीमारियों का सामना शुरू से लेकर कटाई समय तक देखने को मिलता है जिसका मुख्य कारण फफूंद जनित बीमारी जिसको कालर राट, उकठा, जड़ सड़न है. यहां पर प्रायः कालर रॉट की समस्या ज्यादा देखने को मिलती है जिसका लक्षण बुवाई के 20-25 दिन बाद खेत में देखने को मिलता है जैसे ही पौधा लगता है जगह-जगह मरने लगता है जो कि स्क्लेरोशियम सरसों के दाने जैसे दिखाई देता है. अतः इस बीमारी के नियंत्रण के लिए समन्वित प्रबंधन के तरीके के किसानों को अपनाना चाहिए जैसे फसल चक्र परिवर्तन एक खेत में हर साल चना न लगाकर कम बुवाई से पूर्व उपचारित करें,जिसमें सबसे पहले फफूंदीनाशक कार्बेन्डाजिम 03 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर के हिसाब से प्रयोग करें उसके बाद ट्राईकोडर्मा जैव फफूंदनाशक 10 ग्राम प्रति कि.ग्रा. की दर से एवं अन्त में राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुवाई करें. बुवाई के बाद ज्यादा पानी न देकर केवल नमी बनी रहे इतना पानी स्प्रींकलर से सिंचाई करें. चने में इल्ली के समन्वित नियंत्रण हेतु चने की 10 लाइन के बाद एक लाइन धनिया लगायें एवं फेरोमोन ट्रेप का उपयोग करें.

APRIL 2014 TO MARCH 2015

दैनिक भास्कर कवर्धा भिलाई-राजनांदगांव, गुरुवार 20 नवंबर, 2014 18

चना बीज के उपचार की दी गई जानकारी

भास्कर न्यूज | कवर्धा

नगर के कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक डॉ. बीपी त्रिपाठी ने कृषक संगोष्ठी प्रशिक्षण एवं अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के माध्यम से किसानों को चने के बीजोपचार की जानकारी दी। डॉ त्रिपाठी ने बताया कि जिले में करीब 85 हजार हेक्टेयर में चने की खेती की जाती है। जिसमें बुवाई के बाद से पौधे मरने लगते है और कटाई तक रोग ग्रसित रहते है। जिसका मुख्य कारण फफूंद है, जो प्रायः चने की फसल को नुकसान पहुंचाते है।

सबसे ज्यादा नुकसान स्क्लेरोशियम नामक फफूंद से होता है, जिससे कालर राट की बीमारी आती है। उन्होंने कहा कि इसके प्रबंधन हेतु किसानों को समन्वित पौध संरक्षण के उपाय अपनाने चाहिए। जिसके तहत किसानों को अच्छे बीज एवं अनुशंसित किस्म के बीज का चयन करना चाहिए, जो रोग रहित हो। इसके साथ-साथ एक ही खेत में बार-बार चना न लगाकर फसल चक्र परिवर्तन की विधि अपनाना चाहिए। क्योंकि इस बीमारी का फफूंद लंबे समय तक जमीन के अंदर सक्रिय रहता है। जैसे ही फसल लगाते है, वह उसको नुकसान पहुंचाता है। डॉ. त्रिपाठी ने कहा कि चने की बीज बुवाई से पूर्व फफूंदनाशक दवा कार्बेन्डाजिम अथवा मेन्कोजेब 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। साथ में ट्राइकोडर्मा जैव फफूंदनाशी 10 ग्राम प्रति किलो बीज को उपचारित करें। खेत में नमी उपरांत बुवाई करें, जिससे बीज अंकुरित हो जाएगा। प्रायः किसान बुवाई के तुरंत बाद सिंचाई कर देते है। जिससे फफूंद तेजी से सक्रिय हो जाता है। चने में कालर राट, उकठा एवं जड़ सड़न की समस्या कम देखने को मिलेगी।

राजनांदगाँव | हरि

किसानों को दी गई सलाह

कवर्धा। मौसम में आए असामायिक परिवर्तन के कारण वर्षा एवं ओलावृष्टि से फसलों को भारी नुकसान हुआ है। इस परिवर्तन को देखते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र कवर्धा के वैज्ञानिकों ने फसलों का परीक्षण कर किसानों को समन्वित फसल प्रबंधन का सुझाव दिया है। जिले में निरंतर बादल छाए रहने व निरंतर बारिश व ओलावृष्टि से सब्जियों की फसल प्याज, टमाटर, मिर्च प्रभावित हुआ है। उद्यानिकी विशेषज्ञ श्रीमती प्रमिला कांत ने बताया कि प्याज की फसल परिपक्व अवस्था में है, ऐसी स्थिति में प्याज की फसल को तेज धूप की आवश्यकता होती है। इसी तरह टमाटर व मिर्च की फसल में फल लग चुके है। बारिश के कारण फलों के टूटकर गिरने, फलों में दरार पड़ने से पौधों को नुकसान हुआ है। इसके अलावा मौसम में उपस्थित आवश्यकता से अधिक नमी के कारण बैंगन में फली भेदक कीटों का आक्रमण देखने को मिल रहा है। अतः फसल में फली भेदक कीट के प्रकोप से बचाव के लिए कारटाफ हाइड्रोक्लोराइड 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करने का सुझाव दिया है। जिले में इसके साथ ही टमाटर व मिर्च में मौसम में उपस्थित नमी के कारण झुलसा रोग का आक्रमण हो सकता है। अतः पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. बीपी त्रिपाठी ने इस रोग से बचाव के लिए कार्बेन्डाजिम और मैन्कोजेब 250 ग्राम दवा को 150 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिड़काव करने तथा गेहूं व चना की फसल की कटाई उपयुक्त मौसम देखकर करने की सलाह किसानों को दी है।

दैनिक भास्कर कवर्धा भिलाई-राजनांद

फसलों का निरीक्षण कर दिए कई सुझाव

कृषि विशेषज्ञों ने कहा - बदली से पहुंचा नुकसान

भास्कर न्यूज | कवर्धा

असामयिक मौसम परिवर्तन के कारण हुई वर्षा व ओलावृष्टि से फसलों को काफी नुकसान हुआ है। इस परिवर्तन को देखते हुए कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने फसलों का निरीक्षण कर किसानों को समन्वित फसल प्रबंधन का सुझाव दिया। जिले में बादल छाए रहने व बारिश व ओलावृष्टि से सब्जियों की फसल प्याज, टमाटर, मिर्च प्रभावित हुआ है।

उद्यानिकी विशेषज्ञ प्रमिला कांत ने कहा कि प्याज की फसल परिपक्व की अवस्था में है। ऐसी स्थिति में प्याज की फसल को तेज धूप की आवश्यकता होती है। इसी तरह टमाटर व मिर्च की फसल में फल लग चुके हैं। उन्होंने कहा कि बारिश के कारण फलों के टूटकर गिरने, फलो में दरार पड़ने से पौधों को नुकसान हुआ है। इसके अलावा मौसम में उपस्थित आवश्यकता से अधिक नमी के कारण बैगन में फली भेदक कीटों को आक्रमण देखने को मिल रहा है। उन्होंने फसल में फली बेधक कीट के प्रकोप से बचाव के लिए कारटाफ हाइड्रो क्लोराइड 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करने का सुझाव दिया। पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. बीपी त्रिपाठी ने कहा कि जिले में टमाटर व मिर्च में मौसम में उपस्थित नमी के कारण झुलसा रोग का आक्रमण हो सकता है। इस रोग से बचाव के लिए कार्बेंडाजिम मैन्कोजेब 250 ग्राम दवा को 150 लीटर पानी के साथ मिलाकर छिड़काव करें। गेहूं व चना की फसल काटने की अवस्था में है। उन्होंने कहा कि मौसम में उपस्थित नमी व बारिश के कारण फसल को भंडारण से पूर्व धूप में अच्छी तरह सुखाएं। साथ ही अनाज के सुरक्षित भंडारण के लिए उसमें 8-10 प्रतिशत नमी बनाए रखें।

बताया गन्ना बीजोपचार का महत्व

कवर्धा @ पत्रिका
patrika.com/city

जिले के किसानों को गन्ना पौध सुरक्षा के तरीके बताए जा रहे हैं, जिससे गन्ने का अधिक से अधिक उत्पादन हो सके। इसके तहत कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा ग्राम मुख्यालाल में अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन किया गया, जहां किसानों को गन्ना बीजोपचार का महत्व बताया गया।

जिले में गन्ने का रकबा प्रति वर्ष बढ़ता जा रहा है। इसके साथ ही गन्ने की प्रमुख बीमारी लाल-सड़न एवं कीट इल्ली का प्रकोप भी निरंतर बढ़ता जा रहा है। इसे देखते हुए किसानों को गन्ने की बुआई के पूर्व काफी सावधानियां बरतने की जरूरत है। जिससे कि कम से कम रोग एवं कीट का प्रकोप फसल में हो। कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक डॉ. बीपी त्रिपाठी एवं कीट विज्ञान विशेषज्ञ स्वाति शर्मा द्वारा प्रशिक्षण व अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाया गया। इसके तहत गर्म जल एवं रसायनिक दवा द्वारा 12 कृषकों को बीज उपचार की तकनीकी बताई गई। गन्ने की बुआई के पूर्व टेबुकोनाजोल रसायनिक दवा की 0.01 प्रतिशत मात्रा में गन्ने के टुकड़े को 15 से 20 मिनट डुबाकर रखने के बाद बुआई करने पर लाल सड़न बीमारी के प्रकोप की संभावना कम रहती है। साथ ही बुआई के पूर्व स्वस्थ गन्ने के बीज जिसमें किसी प्रकार की बीमारी व कीड़े न हो उसका उपयोग करें। वहीं इल्ली के नियंत्रण के लिए कटॉप हाइड्रोक्लोराइड की चार से सात किलोग्राम की मात्रा बुआई के समय नालियों में छिड़कना चाहिए। इन तमाम विधियों को ध्यान में रखकर गन्ने की फसल का ज्यादा से ज्यादा उत्पादन कर आय का स्रोत बढ़ा सकते है।

कवर्धा. पंक्ति प्रदर्शन कर किसानों को बीजोपचार के तरीके से अवगत कराते कृषि वैज्ञानिक।

APRIL 2014 TO MARCH 2015

दैनिक भास्कर | कवर्धा | गुरुवार, 4 दिसंबर 2014 | 16

बंफर चना उत्पादन के लिए दे रहे सलाह

खेती-किसानी जिले में 85 हजार हेक्टेयर में की जा रही है खेती, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन व प्रेक्षक परीक्षण से खेती करने की सलाह

भास्कर न्यूज|कवर्धा

कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं प्रक्षेत्र परीक्षण के माध्यम से जिले के किसानों को चना फसल के अच्छे उत्पादन की सलाह दी जा रही है। जिले में करीब 85 हजार हेक्टेयर में चने की खेती की जाती है। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी के प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक डॉ. पीपी त्रिपाठी ने बताया कि चने की फसल में बीमारी का सामना बुआई से लेकर कटाई तक करना पड़ता है। चने की फसल में बीमारियों का मुख्य कारण फफूंद जनित बीमारी है, जिसकी कालर राट, उकठा एवं जड़ सड़न के रुप में देखा जाता है।

उन्होंने कहा कि जिले में प्रायः कालर रॉट की समस्या ज्यादा देखने को मिलती है। जिसका लक्षण बुआई के 20-25 दिन बाद खेत में देखने को मिलता है। जैसे ही पौधा उगता है, जगह जगह मरने लगता है, जो स्क्लेरोशियम नामक फफूंद के कारण होता है। यदि इस पौधे को उखाड़ कर देखे तो जमीन के नीचे वाला हिस्सा सफेद कवक जाल से घिरा रहता है और उस पर छोटे छोटे स्क्लेरोशियम सरसो के दाने जैसे दिखाई देता है। उन्होंने कहा कि इस बीमारी के नियंत्रण के लिए समन्वित प्रबंधन के तरीके किसानों को अपनाना चाहिए।

किसानों को फसल चक्र परिवर्तन कर अनुशंसित किस्म के बीजों का चयन करना चाहिए। बुआई के पूर्व बीजोपचार करना चाहिए। डॉ. त्रिपाठी ने कहा कि बीजोपचार के लिए सबसे पहले फफूंदी नाशक कार्बेन्डाजिम 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर के हिसाब से प्रयोग करें। उसके बाद ट्राइकोडर्मा जैव फफूंदनाशक 10 ग्राम प्रति किग्रा की दर से एवं अंत में राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुवाई करें। बुवाई के बाद ज्यादा पानी न देकर केवल नमी बनी रहे इतना पानी स्प्रिंकलर से सिंचाई करें। चने में इल्ली के समन्वित नियंत्रण हेतु चने की 10 लाइन के बाद एक लाइन धनिया लगाए एवं फेरेमोन ट्रेप का उपयोग करें।

कृषि वैज्ञानिकों ने बीमारी पर नियंत्रण के बताए तरीके

कृषि विज्ञान केंद्र ने चना का अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन किया।

किसानों को दी चना पौध सुरक्षा की सलाह

हरिभूमि न्यूज. कवर्धा

कृषि विज्ञान केन्द्र कवर्धा के प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक डॉ. पीपी त्रिपाठी एवं केन्द्र के अन्य वैज्ञानिकों का दल प्रशिक्षण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं प्रक्षेत्र परीक्षण के माध्यम से कबीरधाम जिले के किसानों को चना फसल के अच्छे उत्पादन की सलाह दे रहे हैं।

ज्ञात हो कि कबीरधाम जिले में लगभग 85 हजार हेक्टेयर में चने की खेती की जाती है। जिसमें बिमारियों का सामना शुरू से लेकर कटाई समय तक देखने को मिलता है जिसका मुख्य कारण फफूंद जनित बीमारी जिसको कालर राट, उठका, जड़

सड़न है यहां पर प्रायः कालर राट की समस्या ज्यादा देखने में आती है। जिसका लक्षण बुआई के 20-25 दिन बाद खेत में देखने को मिलता है। जैसे ही पौध उगता है जगह-जगह मरने लगता है जो कि स्क्लेरोशियम सरसों के दाने जैसे दिखाई देता है। अतः इस बीमारी के नियंत्रण के लिए समन्वित प्रबंधन के तीके के किसान भाई को अपनाना चाहिए। जैसे फसल चक्र परिवर्तन, अनुसंशित किस्म के बीजों का चयन, बीज बुआई से पूर्व उपचारित करें। जिसमें सबसे पहले फफूंदनाशक कार्बेन्डाजिम 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर के हिसाब से प्रयोग करें, उसक बाद ट्राईकोडर्मा जैव फफूंदनाशक 10 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से एवं अंत में राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुवाई करें। बुवाई के बाद ज्यादा पानी न देकर केवल नमी बनी रहे इतना पानी स्प्रींकलर से सिंचाई करें।

चने में इल्ली के समन्वित नियंत्रण हेतु चने की 10 लाईन के बाद एक लाईन धनिया लगायें एवं फेरेमोन ट्रेप का उपयोग करें।